3.85 Paper – XII

[redacted]

Behaviouristic view points

व्यवहार के अध्ययन को ... पर ... के लिए व्यवहारवादी विचारधारा की उत्पत्ति हुई। जो मनोविज्ञान का ... व्यवहारवाद के ... के दूसरा भाग है। ... अमेरिका तथा रूस के Academic Psychology शैक्षिक मनोविज्ञान पर 1920 - 60 तक छायी रही ... छाप भी छोड़ा। व्यवहारवाद की स्थापना ... के ... किया लेकिन इसके विकास के Pavlov, Skinner तथा Thorndike का भी ... योगदान रहा। इस व्यवहारवाद के तीन प्रमुख assumption (पूर्वकल्पना) है जो आधुनिक मनोविज्ञान पर ... लागू होता है —

A. Environmentalism - पर्यावरणवाद — इस assumption में इस बात पर जोर दिया गया है कि सभी प्राणी या व्यक्ति पर्यावरण द्वारा ही ... होते हैं। प्राणी ... के आधार पर सभी ... के ... सीखता है। यही कारण है कि प्राणी का व्यवहार पुरस्कार तथा दंड द्वारा ... किया जाता है और प्राणी ... व्यवहार को ही भविष्य में दुहराता है तथा ... व्यवहार को ... नहीं दुहरा सकता है।

B. Experimentalism - प्रयोगवाद — इस पूर्वकल्पना का संबंध इस बात से है कि प्रयोग के माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि पर्यावरण के किस पहलू के ... होता है और किस तरह उसके व्यवहार को परिवर्तित किया जा सकता है। यदि पर्यावरण के महत्वपूर्ण ... को ... किया जाए तो व्यवहार की ... विशेषता ... हो जाएगी और यदि उसे पुनर्स्थापित पर दिया जाए तो व्यवहार की विशेषताओं का पुनरागमन हो जाता है।

C. Optimism - आशावाद — इस पूर्वकल्पना का संबंध परिवर्तन से है। यदि व्यक्ति पर्यावरण का प्रतिफल है और यदि पर्यावरण के ... पहलू जो उसे परिवर्तित किये हैं तो प्रयोग द्वारा ज्ञात किया जा सकता है तो पर्यावरण में कभी परिवर्तन होने से व्यक्ति में भी परिवर्तन होगा।

इस प्रकार व्यवहारवादी विचारधारा के अनुसार स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के ... तथा ... व्यवहार के दो कारण है —

i. ... द्वारा ..., ..., तथा ... संबंधों ... को विकसित करने की ...

ii. ... तथा ... व्यवहार को सीखना

अब प्रश्न यह उठता है कि प्राणी किसी असामान्य व्यवहार को किस तरह सीख लेता है तो व्यवहारवादी विचारधारा के अनुसार सीखने की दो मुख्य प्रक्रियाएं हैं और इन्हीं दोनों प्रक्रियाओं के आधार पर वह सामान्य या असामान्य व्यवहार को सीख लेता है ये दोनों प्रक्रियाएं निम्न हैं -

1. Pavlovian or Classical conditioning पैवलोवियन या क्लासिकी अनुबंधन

सीखने के इस सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या Pavlov द्वारा की गयी। इस सिद्धांत के अनुसार उद्दीपन तथा अनुक्रिया के बीच सामयिक तात्पर्य temporal association पर बल डाला जाता है। जैसे - भोजन प्राणी के लार स्राव की अनुक्रिया स्वाभाविक रूप से करता है और कोई उद्दीपन जो इस भोजन के ठीक पहले दिया जाएगा तो कुछ प्रयास के बाद वह उद्दीपन भी भोजन के समान लार स्राव को उत्पन्न करने लगेगा। इसी प्रक्रिया को अनुबंधन कहा जाता है। पैवलोवियन अनुबंधन में दो मुख्य प्रक्रियाएं होती हैं जो अर्जन तथा विलोपन कहलाती हैं। अर्जन CS (Conditioned stimulus) तथा Unconditional stimulus (US) के बीच सामीप्यता पर आधारित होता है। तथा विलोपन की अवस्था तब उत्पन्न होती है जब CS देने के बाद US नहीं दिया जाता है। (भोजन एक US) तथा लार स्राव (UR) है भोजन के पहले दिया जाने वाला उद्दीपक CS है जो अनुक्रिया होती है वह CR है)

Classical conditioning का सबसे महत्वपूर्ण असामान्य मनोविज्ञान के लिए आशय यह है कि बहुत से असामान्य व्यवहार को व्यक्ति इसी अनुबंधन के आधार पर सीख लेता है। अनुबंधन के अनुसार संवेगिक विकृति भी सीखी जाती है और यदि वे किसी विकृति को भी धारण कर लेते हैं तो उसका भी विलोपन कर देने से अपने आप ही संवेगिक विकृति दूर हो जाएगी। इस विलोपन द्वारी संवेगात्मक विकृति के रूप में ऐसी संवेगात्मक अनुक्रिया होती है जिसे पैवलोवियन अनुबंधन द्वारा सीखा गया होता है। जिसके फलतः यह आशय निकलता है कि वे सारी प्रक्रियाएं जिनके माध्यम से अनुबंधित संवेगिक अनुक्रियाओं को प्रयोगात्मक ढंग से विलोपित किया जाता है के द्वारा संवेगिक विकृतियों को भी दूर किया जा सकता है। इस विलोपन पर आधारित दो तरह के पैवलोवियन चिकित्सा जिसका उपयोग Phobia तथा Anxiety disorder के उपचार में सफलता पूर्वक किया गया है। इनके नाम हैं - फ्लडिंग Flooding and अनुक्रमबद्ध असंवेदीकरण। Flooding में रोगी को लगातार कई घंटे तक उस परिस्थिति में वास्तविक रूप से रखा जाता है जो उसके चिंता उत्पन्न करती हैं। जैसे किसी व्यक्ति को बंद कमरे या छोटी जगह में आने से अत्यधिक भय लगता है उसे ऐसे ही जगह (CS) में कई घंटों

Scanned with CamScanner

तक रोगी से कल्पना करने को कहा जाता है जिससे उसमें धीरे-धीरे चिंता कम होती जाती है। तथा रोगी धीरे-धीरे यह समझने लगता है कि वह व्यर्थ ही उन परिस्थितियों से डरता था। इसी से मिलती जुलती एक अन्य प्रविधि है जिसे implosive theraphy अंतः स्फोटात्मक चिकित्सा कहा जाता है जिसमें रोगी को चिंता या डर उत्पन्न करने वाली वास्तविक परिस्थिति में न रखकर मात्र उसके बारे में कल्पना करने को रोगी कहा जाता है तो इसका भी प्रभाव flooding के समान ही पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि क्लासिकल अनुबंधन के नियम के सहारे यह आसानी से समझा जाता है कि व्यक्ति में असामान्य विकृति का विकास कैसे हुआ तथा उससे छुटकारा पाने का चिकित्सीय प्रविधि क्या हो सकता है।

2. Instrumental or operant Conditioning - साधनात्मक या क्रियाप्रसूत अनुबंधन

इस अनुबंधन की जड़ Thorndike द्वारा प्रतिपादित law of effect है जिसे बाद में Skinner ने न सिर्फ परिवर्धित किया बल्कि इसका उपयोग भी विभिन्न क्षेत्रों में किया। वास्तव में Skinner ने ही क्रियाप्रसूत के सिद्धांत को लोकप्रिय बनाया। इस अनुबंधन के अनुसार व्यक्ति यह सीखता है कि उसे वांछित लक्ष्य (desired goal) की प्राप्ति किस तरह से हो सकती है। किस पुरस्कार को पाना तथा किस दंड से दूर रहना लक्ष्य हो सकता है। operant learning के माध्यम से व्यक्ति धीरे-2 यह सीख लेता है कि कौन-सा व्यवहार या घटना से पुरस्कार मिलता है तथा किस घटना या व्यवहार से दंड मिलता है इसलिए व्यक्ति वैसे व्यवहार को धीरे-2 सीख लेता है जो उसके समायोजन में उसे मदद करता है। इस प्रकार Skinner ने Thorndike के law of effect को law of reinforcement के रूप में नामकृत किया और पावलव नियम में उत्तेजना तथा अनुक्रिया के बीच साहचर्य पर बल न डालकर अनुक्रिया तथा उसके परिणाम पर बल डाला। इन्होंने स्पष्ट किया कि वास्तव में उत्तेजना अनुक्रिया से संबंधित नहीं रहता है बल्कि वह उस अनुक्रिया के होने का मात्र संकेत देता है। जिसे पहले पुनर्बलित किया जा चुका है। इस तरह के उत्तेजक को स्कीनर ने विभेदी उत्तेजक कहा जो प्राणी को यह बतलाता है कि यदि वह अमुक व्यवहार करेगा तो उसे अमुक परिणाम मिलेगा।

Skinner ने पुनर्बलन तथा विभेदी उत्तेजक के संप्रत्ययों के सहारे समायोजी तथा कुसमायोजी व्यवहार के अर्जन की व्याख्या की है। इन्होंने स्पष्ट किया कि जब व्यक्ति विभेदी उत्तेजक के अर्थ को ठीक से समझ लेता है तो वह परिस्थिति के साथ ठीक ढंग से समायोजन स्थापन करने में सफल हो जाता है। यदि किसी कारणवश जब वह विभेदी उत्तेजक के अर्थ को अच्छी तरह नहीं समझ पाता है तो उसकी परिस्थिति के मांग के अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता समाप्त हो जाती है।

Scanned with CamScanner

की यह कुसमायोजन का शिकार हो जाता है।

इस प्रकार Skinner ने इन सिद्धांतों के आधार पर व्यक्ति के समायोजित तथा कुसमायोजित व्यवहार की व्याख्या आसानी से किया है।

इस व्यवहारवादी मॉडल या सिद्धांत के कुछ merits भी हैं जो निम्न लिखित हैं।—

(i) इस सिद्धांत का एक गुण यह है कि इसके द्वारा असामान्य व्यवहार की व्याख्या वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक ढंग से की गयी है जिसके कारण यह काफी प्रशंसनीय है।

(ii) इस सिद्धांत या मॉडल के अनुसार असामान्यता के अध्ययन के क्षेत्र में अब तक जितने शोध प्रयोग हुए हैं अब तक किसी अन्य मॉडल द्वारा प्रतिपादित विचारधारा में नहीं किया गया है।

(iii) इस सिद्धांत की लोकप्रियता इस कारण बढ़ गयी है कि यह असामान्य व्यवहार की व्याख्या तथा उसके उपचार के ढंग को स्पष्ट कर दिया है। यहाँ चिकित्सक यह पहले ही तय कर लेता है कि किस व्यवहार में परिवर्तन करना है तथा कैसे परिवर्तन करना है। जिससे उपचार प्रक्रिया के अन्त बाद में चिकित्सक को पता है कि उस व्यवहार में वांछित परिवर्तन हुआ या नहीं।

इन उपर्युक्त गुणों के बावजूद इस model की कुछ limitations हैं जो निम्न हैं। (i) व्यवहार के बाहरी पक्ष पर काफी बल दिया गया है जबकि अन्य पहलुओं की उपेक्षा की गयी है जो उचित नहीं है क्योंकि इन पहलुओं के अतिरिक्त व्यक्ति का मूल्य तंत्र, संज्ञान तथा आत्म निर्देशन आदि ऐसे महत्वपूर्ण कारक हैं जो असामान्य व्यवहार को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परंतु यहाँ इन्हें महत्वहीन समझ कर उपेक्षा से इसका महत्व कम हो गयी है।

(ii) इस सिद्धांत के अनुसार असामान्य व्यवहार का प्रधान कारण faulty learning माना गया है जिसे साबित करना काफी कठिन है। इसके आलोचकों का यह भी दावा है कि इस model की व्याख्या में गोलापन अधिक है जिसके कारण इसके आधार पर असामान्य व्यवहार की व्याख्या में असंतोष की झलक मिलती है।

इन चंद उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद भी मनोवैज्ञानिकों ने व्यवहारवादी मॉडल को काफी महत्वपूर्ण माना है और शोध के आधार पर इसके नियमों एवं तथ्यों को काफी उपयोगी बताते हुए लोकप्रिय हो गयी है।

9/3/2005

इसकी आलोचना ने इस के ... गया है